तरु तालीस ताल तमाल हिंताल मनोहर।
मंजुल बंजुल लकुच बकुल केर नारियर॥
एला ललित लवंग संग पुंगीफल सौंहै।
सारी सुकुल कलित चित्त कोकिल अलि मोहैं॥
सुक राजहंस कलहंस कुल नाचत मत्त मयूर गन।
अति प्रफुलित फलित सदा रहै केसवदास विचित्र वन॥1॥

शब्दार्थ—हिंताल = एक प्रकार का ताड़ का छोटा वृक्ष। मंजुल = सुन्दर। बंजुल = अशोक। लकुच = छड़हर। बकुल = मौलसिरी। केर = केला। एला = लाची। ललित = सुन्दर। सारी = सारिका, मैना। अलि = भौरा। सुक = तोंता। कलहंस = बत्तख। प्रफुल्लित = खिला हुआ।

प्रसंग—इस छन्द में केशव ने वन की सुन्दरता का परम्परागत वर्णन किया है।

व्याख्या—उस वन में तालीस, ताल, तमाल और हिंताल के मनोहर वृक्ष थे। उसमें सुन्दर अशोक, छड़हर, केला और नारियल के पेड़ थे। लाची और सुन्दर लवंग के साथ पुंगीफल सुशोभित थे। वहाँ पर मैना, तोताओं का सुन्दर समूह, कोयल का मधुर गीत और मोरों की गूँज मन को मोहित करती थी। तोता, राजहंस, बत्तखों के समूह और मस्त भौंरों के झुण्ड नाच रहे थे। केशव कवि कहते हैं कि यह विचित्र वन सदा ही खिला हुआ तथा फूलों से लदा हुआ रहता था।

विशेष—अनेक आलोचकों ने इस छन्द को देखकर यह घोषित किया है कि केशव को न तो प्रकृति का ज्ञान था और न भूगोल का। यही कारण है कि इस छन्द में एला, लवंग, युगीफल आदि वृक्षों का तथा राजहंस आदि पक्षियों का वर्णन हो गया